DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
महाभारत (परिचय)
LIVE
24-08-2024 02:00 PM

1. रामायण

- रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है।
- इसमें सात काण्ड हैं-

काण्ड का नाम	सर्ग संख्या
1. बालकाण्ड	77 सर्ग
2. अयोध्याकाण्ड	119 सर्ग
3. अरण्यकाण्ड	75 सर्ग

4. किष्किन्धाकाण्ड	67 सर्ग – छोटा काण्ड
5. सुन्दरकाण्ड	68 सर्ग
6. युद्धकाण्ड	128 सर्ग – बड़ा काण्ड
7. उत्तरकाण्ड	111 सर्ग
कुलसर्ग	645 सर्ग

- इसमें 24000 श्लोक हैं, अतः इसे चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता भी कहते हैं।
- रामायण में मुख्यतः अनुष्टुप् श्लोक (छन्द) हैं।
- गायत्री मन्त्र में 24 वर्ण होते हैं। अतः यह मान्यता है कि इसको आधार मानकर रामायण में 24,000 श्लोक लिखे गये हैं।
- प्रत्येक 1000 श्लोकों के बाद गायत्री मन्त्र के नये वर्ण से नया श्लोक प्रारम्भ होता है।

- संस्कृत साहित्य में इतिहास संज्ञक दो ग्रन्थ प्राप्त होते हैं एक रामायण दूसरा महाभारत।
- रामायण तथा महाभारत दोनों महाकाव्य के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- वाल्मीकिकृत रामायण आदिकाव्य है।
- यह संस्कृतवाङ्मय में प्राप्त रामकथाओं के अतिरिक्त संसार के अनेक रामकथाओं जैसे अध्यात्म रामायण, अद्भुत

रामायण,कम्बरामायण आदि राम विषयक काव्यों का मूल उपजीव्य स्वीकार किया जा सकता है।

- राजशेखर ने काव्यमीमांसा में इतिहास के दो भेद किये हैं,

1. परिक्रिया
2. पुराकल्प

- परिक्रियात्मक इतिहास एक नायक से सम्बद्ध है, पुराकल्पात्मक इतिहास अनेक नायकों से सम्बद्ध होता है।

- इस प्रकार रामायण केवल एक नायक विषयक होने से परिक्रियात्मक इतिहास स्वीकार किया जा सकता है।
- महाभारत में अनेक नायक सम्बन्धित कथायें होने से उसे पुराकल्पात्मक इतिहास माना जाना चाहिए।
- वेदों के बाद सर्वप्रथम अनुष्टुप् वाणी का प्रवर्तन आदि काव्य रामायण में ही है।

- ऋषि वाल्मीकि के द्वारा विरचित होने के कारण इसे आर्षकाव्य भी कहा जाता है।
- वाल्मीकि ने नारदजी से राम का वृत्तान्त सुना जो रामायण के बालकाण्ड का प्रथम सर्ग है जिसे मूल रामायण भी कहा जाता है।
- वाल्मीकि राम के समकालीन थे, अतः उन्होंने राम के चरित्र को काव्यबद्ध किया।
- ब्रह्मा की आज्ञा से वाल्मीकि ऋषि ने रामायण को रचा।

न ते वागनृता काव्ये काचिदत्र भविष्यति।
कुरु रामकथां पुण्यां श्लोकबद्धां मनोरमाम्।।

- `महाभारत में प्राप्त रामोपाख्यान वाल्मीकि रामायण पर ही आधारित प्रतीत होता है। इससे वाल्मीकिरामायण की प्राचीनता प्रमाणित होती है।

2. महाभारत

- महाभारत के लेखक का नाम व्यास (कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास) है।
- पिता का नाम पराशर ऋषि।
- माता का नाम सत्यवती।
- यमुनाद्वीप में जन्म के कारण वेद व्यास को द्वैपायन कहा जाता है।
- शरीर से कृष्ण वर्ण होने के कारण कृष्णमुनि कहा जाता है।

- वैदिक मन्त्रों को याज्ञिक उपयोग के लिए चार वेदों में विभक्त करने के कारण वेदव्यास कहा जाता है।

'विव्यास वेदान् यस्मात् स तस्मात् व्यास इति स्मृत:'

- व्यास ने तीन वर्षों में महाभारत जैसे महान् ग्रन्थ की रचना की थी।

वंशावली-

1. वशिष्ठ 2. शक्ति 3. पराशर + सत्यवती 4. व्यास 5. शुकदेव

- जन्म स्थान - उत्तरापथ हिमालय
- भारतीय जनमानस की विश्वास परम्परा के आधार पर व्यास को कौरवों और पाण्डवों के समकालीन माना जाता है।
- वेदव्यास वेदों के विभाजन कर्त्ता, महाभारत, एवं भागवत पुराण सहित सभी अट्ठारह पुराणों के कर्त्ता के रूप मेंप्रसिद्ध हैं।

- भारतीय विश्वास में प्रत्येक द्वापर में आकर वेदव्यास वेदों का विभाजन करते हैं। अट्ठाईसवें व्यास का नाम 'कृष्ण द्वैपायन व्यास' है।
- पाश्चात्त्य विद्वानों के अनुसार 'व्यास' किसी का नाम न होकर प्रतीकात्मक कल्पना है।

व्यास का अन्य नाम-

1. बादरायण व्यास (बदरिकाश्रम में ज्ञान की साधना की थी।
2. पाराशर्य (पराशर का पुत्र)

महाभारत का परिचय एवं महत्त्वपूर्ण तथ्य

- विश्व वाङ्मय में सर्वाधिक विशाल ग्रन्थ महाभारत है।
- महाभारत में एक लाख से अधिक श्लोक हैं।
- यह भारतीय जीवन शैली की समग्र और यथार्थ प्रस्तुति है।

- यह आकरग्रन्थ है, इसकी मान्यताएँ शाश्वत अर्थात् सार्वकालिक और सार्वदेशिक हैं।
- भारतीय परम्परा महर्षि व्यास की गणना सप्त चिरंजीवियों में करती है।

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥

- महाभारत भारतीय संस्कृति और आचार परम्परा का सर्वोत्तम विश्वसनीय और आदर्श एवं महानतम ग्रन्थ है।
- महाभारत एक आर्षमहाकाव्य है।
- ऋषि प्रणीत काव्यों को आर्षमहाकाव्य कहा जाता है।
- एक लाख श्लोक होने के कारण महाभारत शतसाहस्त्री संहिता भी कहा जाता है।
- महाभारत, वाल्मीकि रामायण से चार गुना विशाल है।

- महाभारत में लेखक ने अपने युग के समस्त उल्लेखनीय विषयों को उल्लिखित किया है- 'यन्न भारते तन्न भारते।'
- भारतवर्ष के समस्त पक्ष महाभारत में निहित हैं-

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ॥

- अठारह पर्वों में विभक्त है।
- युधिष्ठिर इस ऐतिहासिक काव्य के नायक हैं।
- सबसे बड़ा पर्व शान्तिपर्व (14 हजार श्लोक)
- सबसे छोटा पर्व महाप्रस्थानिक पर्व (115) श्लोक) है।
- अट्ठारह पर्वों के अलावा अन्त में इसके परिशिष्ट के रूप में हरिवंश पर्व में कृष्ण जीवन चरित वर्णित है, इसे मिलाकर श्लोकों की संख्या एक लाख होती है।

महाभारत के संस्करण

1. कलकत्ता संस्करण (1834-39 ई.)

- चार भागों में प्रकाशित।
- बिना किसी टीका के प्रकाशित।
- हरिवंश पर्व सम्मिलित।
- बाद में 1875 ई. में अनुज मिश्र तथा नीलकण्ठ की टीका के साथ प्रकाशित हुआ।

2. बम्बई संस्करण (1862 ई.)

- नीलकण्ठी टीका के साथ प्रकाशित।
- कलकत्ता संस्करण की अपेक्षा उत्कृष्ट।
- गीताप्रेस गोरखपुर से यही संस्करण छह खण्डों में सुन्दर हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित।
- इस संस्करण के साथ हरिवंश पर्व नहीं है।

- गीताप्रेस से हरिवंश पर्व अलग ग्रन्थ के रूप में हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित है।

3. मद्रास संस्करण (1855-60 ई.)

- दाक्षिणात्य पाठ का यह संस्करण मद्रास से तेलगू लिपि में प्रकाशित है।
- हरिवंश पर्व तथा नीलकण्ठी टीका के उद्धरण भी शामिल हैं।

- विशेष भारतवर्ष के बाहर महाभारत का कोई संस्करण प्रकाशित नहीं हुआ।
- आलोचनात्मक संस्करण का सम्पादन, प्रकाशन पुणे (महाराष्ट्र) के भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट (BORI) के तत्त्वावधान में प्रकाशित है।
- यह 24 जिल्दों में प्रकाशित है।
- यह संस्कृतशोध का एक मानदण्ड माना जाता है।

- इसका प्रकाशन 1923 ई. में विराटपर्व से प्रारम्भ हुआ था।
- इसके सम्पादक प्रारम्भ में उतगीकर थे, बाद में अन्य सम्पादक हुये।
- यह प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक संस्करण है।

महाभारत का विकास

(i) जय

- महाभारत का मूलरूप जय के नाम से प्रसिद्ध था।

जयोनामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा। (महाभारत 1/62/20)

- महाभारत के मङ्गल श्लोक में भी स्पष्ट उल्लेख है-

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

- वर्तमान महाभारत के आदिपर्व के 65वें अध्याय से जय की सामग्री का आरम्भ हुआ था।
- क्षत्रिय उत्पत्ति का वर्णन इसी में है।
- इसमें 8800 श्लोक थे।

- व्यास ने इसे वैशम्पायन को सुनाया था।
- धर्मचर्चा मुख्य विषयवस्तु थी।

(II) भारत

- द्वितीय अवस्था में जय का विस्तार भारत के रूप में हुआ।
- इसमें 24000 श्लोक थे।
- इसमें उपाख्यानों को सम्मिलित नहीं किया गया था।

- भारत का प्रवचन वैशम्पायन ने व्यास के आदेश पर जनमेजय के समक्ष नागयज्ञ के अवसर पर किया था।

(iii) महाभारत

- अन्तिम अवस्था में एक लाख से अधिक श्लोकों का महाभारत ग्रन्थ बना।
- भारत को 'महाभारत' के रूप में परिणत करने का अवसर नैमिषारण्य नामक पवित्र स्थान पर होने वाला यज्ञ था।

- इस यज्ञ को शौनक ऋषि ने अनुष्ठित किया। यह द्वादशवार्षिक सत्र था।
- इसके प्रवक्ता सौति नामक ऋषि थे।
- बारह वर्षों के दीर्घकाल में सौति ने अपने श्रोताओं की जिज्ञासा शान्त की।
- भारतवर्ष का विश्वकोष 'महाभारत' है।

महत्वाद् भातरतत्वाच्च महाभारतमुच्यते। (1.1.274)

- पूना संस्करण के सम्पादक डॉ. सुक्यनकर के अनुसार इसके उपबृंहण का कार्य मुख्यत: भृगुवंशी ब्राह्मणों ने किया।
- कुलपति शौनक स्वयं भार्गव थे।
- कृष्ण की कथा से अलंकृत करने के लिए इसमें हरिवंश खिलपर्व (परिशिष्ट) के रूप में जोड़ा गया है।
- सौति ने विशालकाय महाभारत को अट्ठारह मुख्य एवं दीर्घकाय पर्वों में विभक्त किया।

पर्व

आदि	द्रोण	अनुशासन
सभा	कर्ण	आश्वमेधिक
वन	शल्य	आश्रमवासिन
विराट	सौप्तिक	मौसल
उद्योग	स्त्री	महाप्रस्थानिक
भीष्म	शांति	स्वर्गारोहण

8 AM